Available online at http://www.nrjp.co.in

एकात्म
संस्करण १, अंक १, चैत्र मास, २०१८

National Research
& Journal Publication

लेख

सरकार की नीतियों में दीनदयाल जी के विचारों का प्रभाव

डा०. सर्वज्ञ शुक्ल
सह प्राध्यापक, वाणिज्य संकाय, बी एन डी क०लेज, कानपुर

सारांश

मानव की बुनियादी जरूरतों का सीधा जुड़ाव सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक विषयों से होता है। एक आम मनुष्य का निजी एवं सार्वजनिक जीवन इन तीनों कारकों से प्रभावित होता है। कभी उसे राजनीति प्रभावित करती है तो कभी समाज की रीती–नीति तो कभी अर्थनीति का प्रभाव होता है। लेकिन सही मायने में अगर देखें तो मानव मात्र के लिए ये तीनों ही परस्पर जुड़े हुए कारक हैं। एक आम मनुष्य की मूल जरूरतों की पूर्ति को ध्यान में रखते हुए इतिहास में अनेक विद्वानों द्वारा अनेक विचार दिए गये हैं।

अनेक विद्वानों ने अपने–अपने तरीके से यह बताने की कोशिश की है कि मानव मात्र की बेहतरी के लिए समाज का स्वरुप क्या हो, राजनीति कैसी हो और अर्थनीति किस ढंग से संचालित की जाय। इसी श्रृंखला में एक बड़ा नाम जनसंघ के नेता, महान विचारक एवं चिंतक पंडित दीन दयाल उपाध्याय का भी है। राजनीति, समाज और अर्थ को मानव मात्र के कल्याण से जोड़ने का जो एक सूत्र पंडित दीन दयाल उपाध्याय ने दिया है, वो एकात्म मानववाद के दर्शन के रूप में विख्यात है।

मुख्य शब्द : *एकात्म मानव दर्शन, मानवता, दीनदयाल उपाध्याय।*

आज देश पंडित दीन दयाल उपाध्याय जी को याद करते हुए उनकी जन्म शताब्दी वर्ष मना रहा है। उनके विचारों का सरकार की नीतियों का आधार बनना बेहद ही उपयोगी साबित होगा। दीन दयाल जी ने अपने चिन्तन में आम मानव से जुड़ी जिन चिंताओं और समाधानों को समझाने का प्रयास आज से दशकों पहले किया था, आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार द्वारा उन्हीं बातों को केंद्र में रखकर सरकार की नीतियों का निर्माण किया जा रहा है। भारत और भारतीयता के संवाहक एवं संचारक के रूप दीन दयाल उपाध्याय के विचार किसी आदर्शलोक का दर्शन होने की बजाय व्यवहारिकता के धरातल पर बेहद मजबूती से टिकते नजर आते हैं।

पंडित दीन दयाल उपाध्याय द्वारा एकात्म मानववाद का विकल्प उस कालखंड में दिया गया जब देश में समाजवाद, साम्यवाद जैसी आयातित विचारधाराओं का बोलबाला था। भारत में भारतीयता को पुनर्जीवित करने वाली विचारधारा की बजाय समाजवाद एवं

साम्यवाद जैसी आयातित विचारधाराओं का होना भारतीयता के लिए अनुकूल नहीं था। पंडित जी ने भारत की समस्या को भारत के सन्दर्भों में समझकर उसका भारतीयता के अनुकूल समाधान देने की दिशा में एक युगानुकुल प्रयास किया। चूँकि, पंडित दीन दयाल उपाध्याय इस बात को लेकर गम्भीर थे कि आजादी से पूर्व का जो संघर्ष था, वो स्वराज का संघर्ष था। लेकिन, आजादी के बाद का जो संघर्ष है, वो 'स्व' की अवधारणा को मजबूत करने का संघर्ष है। पंडित जी मानते थे कि राष्ट्र के निर्माण और उसकी मजबूती में उसकी विरासत के मूल्यों का बड़ा योगदान होता है। देश के आम जन जीवन की बेहतरी, आम जन–जीवन की सुरक्षा, आम जनता को न्याय आदि के संबंध में एक समग्र चिन्तन अगर किसी एक विचारधारा में मिलता है तो वो एकात्म मानववाद का विराट दर्शन है। पंडित जी द्वारा प्रदिपादित इस विचार दर्शन में 'एकात्म' का आशय अविभाज्य अथवा एकीकृत अवधारणा से है। वहीं मानववाद से आशय यह है कि सबकुछ मानव मात्र के कल्याण हेतु संचालित हो।

हालांकि यह जरूरत थी कि पंडित दीन दयाल जी द्वारा देश के राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक विकास की दिशा में दिए गये विचार दर्शन को सरकार की नीतियों में प्रमुखता से शामिल किया जाय। मेरा निजी मत है कि जब पंडित जी 'स्व' की बात कर रहे थे तो उनका स्पष्ट दृष्टिकोण राष्ट्र की बहुमुखी आत्मनिर्भरता को स्थापित करना रहा होगा। तत्कालीन दौर बेशक तकनीक के दौर वाले आधुनिक भारत से बेहद अलग था, मगर उनके 'स्व' की अवधारणा का अगर मूल्यांकन करें तो उनकी दृष्टि में एक सक्षम भारत का भावी चित्र रहा होगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में काम कर रही भारत सरकार उस 'स्व' की दृष्टि को अपनी नीतियों में प्रमुखता से लागू कर रही है। आत्मनिर्भरता से अन्त्योदय की राह निकालने की दृष्टि के साथ काम कर रही भाजपा–नीत केंद्र सरकार की तमाम योजनाओं में अंतिम कतार के व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाने का संकल्प और प्रतिबद्धता साफ दिखती है।

अगर हम केंद्र सरकार के एक कार्यक्रम 'मेक इन इण्डिया' को ही उदाहरण के तौर पर लें तो यह कार्यक्रम वैश्वीकरण के इस दौर में भारत को निर्माण एवं रोजगार के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में मील का पत्थर साबित होने वाला कार्यक्रम है। बेशक इस कार्यक्रम का लक्ष्य दूरगामी है और इसका मूल्यांकन तुरंत अथवा बहुत जल्दीबाजी में नहीं किया जा सकता है, लेकिन अपने लक्ष्य तक पहुँचते–पहुँचते यह कार्यक्रम एक आत्मनिर्भर भारत की स्थापना में महत्वपूर्ण कारक साबित होगा। पंडित जी अन्त्योदय की बात करते थे। उनके मन में कतार के अंतिम व्यक्ति तक खुशहाली और समृद्धि का प्रकाश पहुँचाने की चिंता सदैव रही है। उनके वैचारिक दृष्टिकोण में जिस अन्त्योदय की अवधारणा का जिक्र आता है, यह समाज के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति को सक्षम, सबल और स्वालम्बी बनाने की उनकी चिंता का ही प्रतिफल था। वर्तमान में जब केंद्र में उसी दल की सरकार है जिसकी नींव की पहली ईंट रखने में दीन दयाल उपाध्याय जी का महती योगदान था तो उनके विचारों का सरकार की नीतियों में व्यापक प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है।

स्टार्ट–अप, स्टैंड–अप जैसी योजनाओं के माध्यम से सरकार ने अंतिम व्यक्ति को सबल, सक्षम और स्वालम्बी बनाने की दिशा में कार्य को आगे बढ़ाया है। इन योजनाओं को लेकर सरकार का दृष्टिकोण साफ है कि आम जन महज नौकरी की निर्भरता से ऊपर उठकर मुख्यधारा से जुड़े एवं आर्थिक रूप से न सिर्फ खुद स्वालम्बी बने बल्कि औरों के लिए अवसर पैदा करें। स्टैंडअप जैसी योजना के माध्यम से समाज के उस वर्ग को आत्मनिर्भर बनाने की कोशिश की गयी है जो लंबे समय से हाशिये पर है। आज अगर केंद्र सरकार की विकास यात्रा के केंद्र में 'सबका साथ–सबका विकास' की मूल भावना नजर आती है तो इसके प्रेरणास्त्रोत के रूप में दीन दयाल जी के विचार ही नजर आते हैं। पंडित जी का स्पष्ट मानना था कि जो व्यक्ति आर्थिक रूप से स्वतंत्र नहीं होता है वह राजनीतिक रूप से भी स्वतंत्र नहीं होता है। आज सरकार आम जन को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर और स्वालम्बी बनाने की दिशा में जिन प्रयासों पर सतत काम कर रही है, वो वाकई इन्हीं विचारों से ओत–प्रोत नजर आते हैं। चूँकि भारत की अर्थव्यवस्था के मूल में कृषि है लिहाजा पंडित दीन दयाल उपाध्याय कृषि सुधारों पर खास जोर देने की बात करते थे। वे कृषि में भारतीय कृषि के अनुरूप आधुनिकता का प्रवेश भी चाहते थे। वर्तमान केंद्र सरकार द्वारा कृषि सुधारों की दिशा में सॉयल हेल्थ कार्ड (Soil Health Card) जैसी योजना को लाना यह प्रमाणित करता है कि सरकार कृषि सुधार को आधुनिक तकनीक के माध्यम से करने की दिशा में लगातार नवाचार कर रही है।

पंडित दीनदयाल ने दुनिया को सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का सिद्धांत दिया, जो व्यक्ति को परिवार,समाज, देश–दुनिया और प्रकृति से जोड़ता है। दीनदयाल जी मानते थे कि देश की प्राचीन संस्कृति और मूल्यों के अनुरूप देश के लोकतंत्र का संचालन किया जाना चाहिए। उन्होने कहा कि पंडित दीनदयाल गरीब परिवार में पैदा हुए। बचपन में माता–पिता के गुजर जाने के बाद विपरीत परिस्थितियों में भी अपनी शिक्षा पूरी करते हुए उन्होंने अपना पूरा जीवन देश सेवा के लिये समर्पित कर दिया। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने आर्थिक लोकतंत्र का सिद्धांत दिया। उनका कहना था कि जिस प्रकार प्रत्येक वयस्क नागरिक को मतदान का अधिकार मिलता है, ठीक उसी तरह लोगों को कार्य करने का भी मिलना चाहिए। जो व्यवस्था आने वाली पीढ़ी के लिये कार्य के अवसरों को कम करती है वह व्यवस्था कारगर नहीं होती। आर्थिक लोकतंत्र हासिल करने के लिये पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने विकेंद्रीकरण एवं स्वदेशी को जरूरी माना। उनका मानना था कि सभी देश अपनी स्वदेशी जीवन शैली और स्वदेशी वस्तुओं को अपनाएं।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने एकात्म मानववाद का सिद्धांत दिया। पंडित जी का कहना था कि देश को वर्गों में नहीं बल्कि एकात्मकता में पिरोकर देखना चाहिये। दुनिया में सब चीजें एक दूसरे से परस्पर जुड़ी हुई हैं। उपाध्याय जी का मानना था कि गरीबों को रोटी देने के बजाए उनको रोटी 'पैदा' करने की ताकत देना जरूरी है। लोगों को सक्षम बनाना चाहिए, ताकि वे अपनी जरूरतों को पूरा कर सकें। पंडित दीनदयाल उपाध्याय मानते थे

कि एकात्म मानववाद संस्कारों से आ सकता है। समाज में सत्ता को निर्देश देने की ताकत रखना चाहिये। समाज जब तक राज्य पर निर्भर रहेगा, तब तक परावलंबी रहेगा। जो लोग सार्वजनिक जीवन में काम कर रहे हैं उन्हें लोक शिक्षण का कार्य करना चाहिये। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने लोकमत के परिष्कार पर बल दिया। उनका मानना था कि सिद्धांतविहीन मतदान सिद्धांतविहीन राजनीति का जनक होता है। इसलिये लोगों को शिक्षित करना सामाजिक तथा राजनीतिक कार्यकर्ताओं का दायित्व होना चाहिए।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक दार्शनिक, समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री एवं राजनीतिज्ञ थे। इनके द्वारा प्रस्तुत दर्शन को 'एकात्म मानववाद' (Integral humanism) कहा जाता है जिसका उद्देश्य एक ऐसा 'स्वदेशी सामाजिक–आर्थिक मॉडल'प्रस्तुत करना था जिसमें विकास के केंद्र में मानव हो।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने पश्चिमी 'पूंजीवादी व्यक्तिवाद' एवं 'मार्क्सवादी समाजवाद' दोनों का विरोध किया, लेकिन आधुनिक तकनीक एवं पश्चिमी विज्ञान का स्वागत किया। ये पूंजीवाद एवं समाजवाद के मध्य एक ऐसी राह के पक्षधर थे जिसमें दोनों प्रणालियों के गुण तो मौजूद हों लेकिन उनके अतिरेक एवं अलगाव जैसे अवगुण न हो। उपाध्याय के अनुसार पूंजीवादी एवं समाजवादी विचारधाराएँ केवल मानव के शरीर एवं मन की आवश्यकताओं पर विचार करती है इसलिए वे भौतिकवादी उद्देश्य पर आधारित हैं जबकि मानव के संपूर्ण विकास के लिए इनके साथ–साथ आत्मिक विकास भी आवश्यक है। साथ ही, उन्होंने एक वर्गहीन, जातिहीन और संघर्ष मुक्त सामाजिक व्यवस्था की कल्पना की थी।

एकात्म मानववाद की वर्तमान प्रासंगिकता–

- आज विश्व की एक बड़ी आबादी गरीबी में जीवन यापन कर रही है। विश्वभर में विकास के कई मॉडल लाए गए लेकिन आशानुरूप परिणाम नहीं मिला। अतः दुनिया को एक ऐसे विकास मॉडल की तलाश है जो एकीकृत और संधारणीय हो। एकात्म मानववाद ऐसा ही एक दर्शन है जो अपनी प्रकृति में एकीकृत एवं संधारणीय (Integral and sustainable) है।
- एकात्म मानववाद का उद्देश्य व्यक्ति एवं समाज की आवश्यकता को संतुलित करते हुए प्रत्येक मानव को गरिमापूर्ण जीवन सुनिश्चित करना है। यह प्राकृतिक संसाधनों के संधारणीय उपभोग का समर्थन करता है जिससे कि उन संसाधनों की पुनः पूर्ति की जा सके।
- एकात्म मानववाद न केवल राजनीतिक बल्कि आर्थिक एवं सामाजिक लोकतंत्र एवं स्वतंत्रता को भी बढ़ाता है। यह सिद्धांत विविधता को प्रोत्साहन देता है अतः भारत जैससे विविधतापूर्ण देश के लिए यह सर्वाधिक उपयुक्त है।

एकात्म मानववाद का उद्देश्य प्रत्येक मानव को गरिमापूर्ण जीवन प्रदान करना है एवं 'अंत्योदय' अर्थात समाज के निचले स्तर पर स्थित व्यक्ति के जीवन में सुधार करना है। इस प्रकार, यह दर्शन भारत जैसे कल्याणकारी राज्य में सदैव प्रासंगिक रहेगा।

सन्दर्भ :

1. सक्सेना, एन0आर0स्वरूपः 2002, ग्यारहवाँ संस्करण "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक" सूर्या पब्लिकेशन, निकट राजकीय इण्टर कॉलेज, मेरठ–250001
2. सक्सेना, एन0आर0स्वरूप व शिखा चतुर्वेदीः 2007, "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक", आर0लाल बुक डिपो, निकट राजकीय इण्टर कॉलेज, मेरठ–250001
3. अग्रवाल जे0 सी0ः 1972 "विद्यालय प्रशासन", आर्य बुक डिपो, करौलबाग, नई दिल्ली–51
4. भिषीकर, चन्द्रशेखर परमानन्दः 1991, द्वितीय संस्करण, "पं0 दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन" खण्ड–5 (राष्ट्र की अवधारणा), सुरुचि प्रकाशन, झण्डेवालान, नईदिल्ली–110055
5. उपाध्याय,दीनदयाल : 2007, दशम् संस्करण, "राष्ट्र जीवन की दिशा", लोकहित प्रकाशन, संस्कृति भवन राजेन्द्रनगर,लखनऊ–226004
6. उपाध्याय,दीनदयालः 2007, अष्टम् संस्करण, "राष्ट्र चिन्तन", लोकहित प्रकाशन, संस्कृति भवन राजेन्द्रनगर,लखनऊ–226004
7. उपाध्याय, दीनदयालः 2004, नवम् संस्करण, "एकात्म मानववाद", जागृति प्रकाशन,नोएडा–201301
8. उपाध्याय, दीनदयालः 1991, द्वितीय संस्करण, "पोलिटिकल डायरी" सुरुचि प्रकाशन, झण्डेवालान, नई दिल्ली–110055